तीन प्रकार के जीवन
लेखक :
ब्रह्मर्षि
तटवर्ती वीर राघवराव

तीन प्रकार के जीवन

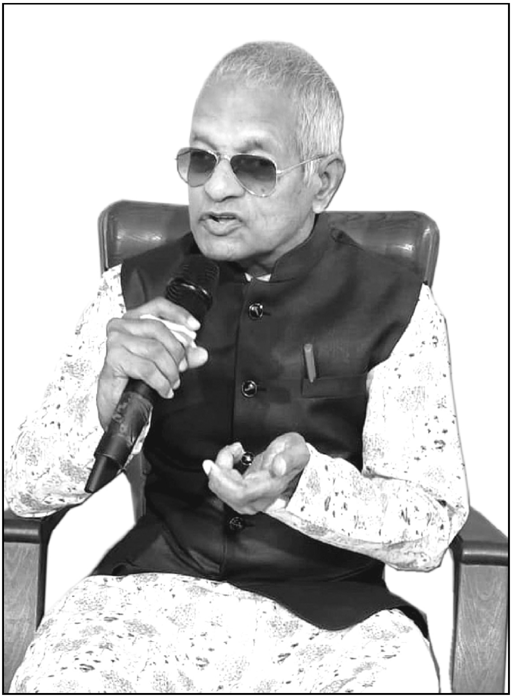

लेखक : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीमति जे.पुष्पलता

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।.. Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.. Rs.160/-
3. भगवद गीता का सार ।.. Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.. Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?.. Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.. Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।.. Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ । Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.. Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ? Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।.. Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?.. Rs.100/-
14. इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँ..................... Rs.100/-
15. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.................Rs.80/-
16. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।...Rs.80/-
17. आत्म हंतक कौन होता है ।...Rs.70/-
18. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
19. दुख निवारण का मार्ग...Rs.75/-
20. उत्तम पुरूष..Rs.60/-
21. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ? Rs.60/-
22. निर्वाण मार्ग..Rs.60/-
23. सत्य..Rs.50/-
24. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ? Rs.50/-
25. गुरू को पहचानना कैसे ?..Rs.50/-
26. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
27. शाकाहार ही मानव का आहार है! Rs.50/-
28. ब्रह्मं क्या है ? Rs.50/-
29. शंकराचार्य जी का जाग्रत पंचक Rs.50/-
30. शंकराचार्य जी का निर्वाण शट्कम Rs.50/-
31. चैंपियन बनना हो तो ? Rs.50/-
32. तीन प्रकार के जीवन..Rs.50/-
33. संकल्प अर्थात ? Rs.40/-

तीन प्रकार के जीवन

मनुष्य के तीन प्रकार के जीवन होते हैं। ये तीनों ही मनुष्य के ज्ञान की दायरे को दर्शाने वाला हैं। अब चलिए उन लोगों के बारे में बात करें जो ये तीन तरह के जीवन जीते हैं। असल ये तीन प्रकार क्या हैं ?

1) रात का जीवन, 2) संध्या जीवन, 3) दिन का जीवन

1) रात का जीवन:

रात का जीवन का अर्थ है पूरी तरह अज्ञान से भरा हुआ जीवन। इसीलिए अज्ञान की तुलना अंधकार से की जाती है। जैसे अंधकार में जो है वह दिखाई नहीं देतीं, वैसे ही अज्ञान में रहने वालों को जो है, वह दिखाई नहीं देता अर्थात उन्हें पता नहीं। विचित्र बात यह है कि ? अज्ञान में रहने वालों को जो नहीं है, वही दिखाई देते रहते हैं।

इसलिए यह माना जा सकता है कि इन्हें कुछ भी नहीं जानते। क्या करना है यह नहीं जानते, जो नहीं करना चाहिए वे सब करते रहते हैं। क्या बात करना है नहीं जानते। इसलिए बेकार बातें, अनुचित बातें, विरोधाभासी बातें बात करते हैं। इसी तरह यह भी नहीं जानते कि क्या सोचना चाहिए। वे जो सोच रहे हैं सब, जो उनके लिए हानिकारक ही सोचते हैं।

क्योंकि हम जो कहते हैं अज्ञान में रहने वालों को समझ में नहीं आता। जो होता है उसे नहीं दिखाई देता है। जो होता है वह क्या है ? अर्थात आत्मा। आत्मा उन्हें दिखाई नहीं देता है, आत्मा होने वाले लोक दिखाई नहीं देते, उन लोकों में रहने वाले दिखाई नहीं देते। इस सृष्टि के संचालन के लिए स्थापित किए गए सिद्धांत दिखाई नहीं देते, धर्मों को नहीं जानते, यह भी नहीं जानते कि उनके किए हुए कर्म रिकॉर्ड होते हैं, उनके परिणामों को ही वे कष्ट के रूप में अनुभव कर रहे हैं।

इसलिए जो लोग इस रात का जीवन को जी रहे हैं, उनके पास यह ज्ञान नहीं होने के कारण, अज्ञान में होने के कारण सब अलग-अलग सोचते हुए क्या करना है यह नहीं जानकर जो नहीं करना चाहिए वही करते हैं।

यह आपके लिए दिन का जीवन में आ जाते हैं तो यानी ज्ञान के जीवन में आ जाते हैं तो आपको समझ में नहीं आती। केवल ज्ञानी होने पर ही यह समझ में आता है कि सभी आत्माएँ, वास्तव में एक ही हैं। इस रात का जीवन में रहने के कारण, अर्थात अज्ञान में रहने के कारण, वे सबको अलग-अलग है ऐसा सोचते हुए, अपने स्वार्थ को देखते हुए, और यह सोचते हैं कि दूसरों के साथ कुछ भी हो जाए कोई फर्क नहीं पड़ता, इसलिए वे काम करते हैं जो नहीं करने चाहिए।

इसीलिए हमने कहा कि उन्हें क्या करना है यह नहीं जानते, क्या बात करना है यह नहीं जानते। यूंही केवल व्यर्थ बातें करते हैं, आलोचना करते रहते हैं, निंदा करते रहते हैं, अपमान करते हैं। ऐसा करने से इस रात का जीवन को जीने वालों को अधिक कष्ट होते हैं। इस रात का जीवन में रहने वाले, अर्थात अज्ञान में रहने वाले, हमेशा बढ़ाने की देखते हैं जो नहीं होते है। वे वही अर्जित करना चाहते हैं। अगर उन्हें वही कुछ भी मिल जाए, तो वे बहुत भाग्यशाली मानते हैं और खुशी से फूल जाते हैं।

अगर किसी ने कोई उपाधि, पुरस्कार दिया, वे केवल खुशी से फूल जाने कि बहुत बड़ा काम किया है ही नहीं, गर्व भी करते हैं। वे सोचते हैं कि वे तभी महान हैं जब वे ऐसी चीजें अर्जित करते हैं, ऐसे सभी लोग रात का जीवन जीने वाले होते हैं। इसलिए सभी विषयों में उनका आचरण पूरी तरह से आत्मा के विपरीत होता है।

क्योंकि जो लोग इस रात का जीवन को जीते हैं आत्मा होने पर भी दिखाई नहीं देते। इसीलिए वे आत्मा की परवाह नहीं करते, आत्मा के

बारे में नहीं सोचते, आत्मा को जानने का प्रयास नहीं करते, आत्मा की महानता को नहीं जानते, आत्म–सुधार के लिए प्रयास नहीं करते। इसलिए उनके द्वारा किए गए कामों को वजह से आत्मा को कोई लाभ नहीं होगा, जीवन के अंत में आत्मा के बारे में जानकर बहुत कष्ट सकेंगे।

यह समझा जाता है कि ओह कितना जीवन को बर्बाद कर दिया है, सभी जो नहीं करना है वहीं विपरीत काम किए हैं, वो चीजें खाई हैं जो मुझे नहीं खानी चाहिए थीं, जीवन को बहुत बर्बाद कर दिया है।

जो लोग रात में इस जीवन को जीते हैं वे सोचते हैं कि वे यह शरीर मैं हूँ, लेकिन वे यह नहीं जानते कि वे आत्मा हैं। मैं नहीं जानता कि मृत्यु के बाद भी मेरा जीवन होगा या नहीं, मृत्यु के बाद होते हुए लोकों के बारे में नहीं जानता, उन लोकों में उच्चतर लोकों तक पहुँचने के बारे में नहीं जानता, नहीं जानता कि उनका लक्ष्य क्या है, नहीं जानता कि उसका गंतव्य क्या है। कुछ भी नहीं जानने के कारण से वे स्वयं को शरीर समझकर जो नहीं करनी चाहिए ऐसे कार्यों को करके आत्मा को हानि पहुंचाते हैं। यानी वे स्वयं को नुकसान पहुंचाएंगे, वे कठिनाई भी पैदा करते हैं।

मेरे जीवन के 53 साल ऐसे ही बीत गए है। यानी पत्री जी परिचय होने से पहले रात का जीवन को बिताया है। तब तक मैं सोचता था कि मैंने महान जीवन जिया है, सोचा कि मैंने महान काम किया है। लेकिन पत्री जी के माध्यम से मुझे एहसास हुआ कि मैं शरीर नहीं बल्कि आत्मा हूँ, आश्चर्यचकित हुआ है।

तब सोचने से समझता हुआ कि पत्री जी ने जो कहा था वह सही था। तब ऐसा हुआ कि मैं रात के जीवन से दिन के जीवन में आ गया। मेरे काम, मेरे शब्द, मेरे सोचने का तरीका सब बदल गया है।रात के जीवन के लिए दिन जीवन के लिए मेरा व्यवहार पूरी तरह से अगल हो गया है। एक तरह से कहने के लिए आप में से कई लोग रात की जीवन से दिन की

जीवन में आ गए हैं, लेकिन कुछ लोग संध्या जीवन में रह गए।

2) संध्या जीवन :

एक दिन में तीन चरण होते हैं। रात, दिन, संध्या। यहाँ ऐसा हुआ कि मानव ज्ञान के दायरे की तुलना इन तीन प्रकारों से की गई है।

यदि हम गौर से देखें तो जब रात होते हुए समय पूरी तरह से अंधेरा रहता है। वही दिन के समय पूरा प्रकाश से होता है। लेकिन इन दोनों के बीच में संध्या भी है। इसे संध्या समय कहते हैं। इस संध्या के दो प्रकार हैं।

ए) रात्रि संध्या, बी) दिन संध्या

यदि हम यहां गौर से देखें तो क्या दिन जैसा प्रकाश ऐसा हमेशा के लिए रहेगा ? यानी यह हमेशा के लिए नहीं रहता, धीरे-धीरे से रात में बदल जाती है, प्रकाश चली गई है अंधेरा में बदल जाता है। इस तरह रात में बदल जाती है उसे समय को ही रात्रि संध्या कहते हैं।

इसी प्रकार अंधकार भी हमेशा नहीं रहता।वह अंधकार धीरे-धीरे चली जाते-जाते प्रकाश आता है, अर्थात वहां भी अंधकार धीरे-धीरे प्रकाश में बदल रहा है। धीरे-धीरे दिन में बदल जाता है। यही दिन का संध्या।

तो फिर कुछ लोगों की तुलना इस संध्या जीवन से क्यों की जाती है जो इन दोनों के बीच में परिवर्तन होता है यानी ? जो लोग अज्ञान में हैं वे धीरे-धीरे अनेक जन्म लेते हैं, उस जन्मों में अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं, कठिनाइयों का अनुभव करना, अंत में निर्णय लेते हैं कि में उन्हें इन सब से हमेशा के लिए बाहर आना चाहिए। वे इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि उन्हें किसी तरह इस पीड़ा से बाहर निकलना होगा। इसके लिए वे एक सदगुरु की आश्रय लेते हैं।

इस प्रकार सद्गुरु की आश्रय लेते समय गुरु उन्हें स्पष्ट रूप से

बताते हैं कि यदि तुम दु:ख से स्थायी रूप से बाहर आना चाहिए यानी तुम्हें ज्ञान हासिल करना चाहिए, बुद्धिमान बनना चाहिए। यदि तुम ज्ञान प्राप्त कर लोगे, तो दु:ख होने पर भी दु:खी नहीं होंगे, उस ज्ञान के वजह से तुम्हारे सारे कर्म जल जाएँगे, आप कर्महीन स्थिति को प्राप्त हो जाओगे। तुम्हें ऐसा ज्ञान हासिल करना चाहिए। वे कहते हैं कि ऐसा ज्ञान हासिल करना चाहिए यानी आध्यात्मिक त्रिरत्नों का पालन करना चाहिए।

आध्यात्मिक तीन रत्न यानी अभ्यास, स्वाध्याय, संगति। यानी

1) श्वास पर ध्यान करके तीव्र तर ध्यान करना।

2) स्व-अध्ययन का अर्थ है आत्म-ज्ञानी लोगों द्वारा लिखी गई आत्म-ज्ञान को संबंधित पुस्तकें भी पढ़ते रहना है।

3) इस ज्ञान को सिखाने वालों की संगति करके.. उनके संदेशों को सुनना। जब भी मौका मिले तो मैं उनके साथ समय बिताने की प्रयास करना है। उनके साथ इस तरह समय बिताते हुए तो बहुत सी विषयों को जो आप नहीं जानते उनसे जान सकते हैं। आप अपनी गलतियों को, त्रुटियों को सुधारेंगे। उस गुरु से निकला हर शब्द आपके ज्ञान को बढ़ाने के लिए बहुत उपयोगी है।

साथ ही आपके इस ज्ञान-मार्ग पर जितना हो सके उतना सेवा करनी चाहिए। इसका अर्थ केवल ज्ञान अर्जित करना ही नहीं है, बल्कि अपने अर्जित ज्ञान को जितना संभव हो सकें, दूसरों को सिखाना भी है। यह एक अद्भुत सेवा है, सबसे महान सेवा है। इसके साथ ही इस ज्ञान को सभी तक पहुँचने के लिए आपको अपने स्तर पर जो भी संभव हो वह करना चाहिए।

गुरु कहते हैं कि इस प्रकार जो लोग अज्ञान में हैं उनका अज्ञान दूर करके हमें उन्हें बुद्धिमान बनाने के लिए किसी न किसी तरह से मदद करनी चाहिए। ऐसे जो लोग अज्ञान में हैं वे पत्री जी के मार्ग पर, मेरे पास,

अम्मा के पास आके ज्ञान प्राप्त करने के वजह से उनमें अनेक परिवर्तन आ रहे हैं ।और भी आने वाले कई हैं। यानी ऐसे होने वाले सभी लोग संध्या जीवन में है। इन सभी का जीवन संध्या जीवन ही होता है।

इसके अलावा उन गुरुओं द्वारा सिखाए गए उस ज्ञान को पूरी तरह से नहीं समझते हैं। इसे समझमे आते, लेकिन समझ नहीं जैसे लगते हैं ।उनका जीवन कैसे होगा ? ऐसा कैसे है कि कुछ लोग रस्सी को देखकर उसे साँप समझ लेते हैं ?क्या यह रस्सी है ? क्या यह साँप है ? वे भ्रमित हो जाते हैं क्योंकि स्पष्ट रूप से पता नहीं होता! तो इस संध्या जीवन में रहने वालों कि उन गुरुओं द्वारा बताए गए ज्ञान-संबंधी बातों को समझ में न आने के कारण क्या वे सही हैं ? या नहीं ? वे संशय में हैं, क्या मैं अपनी दुखों को पूरी तरह से दूर कर सकते हैं ? क्या मैं उस स्तर तक पहुँच सकता हूँ जो मैं चाहता हूँ ? वे संदिग्ध हैं।

इसलिए इनमें से कुछ लोग उनके द्वारा किए जाने वाले अभ्यास पर, पालन किए जाने वाले नियमों पर, आचरण करना चाहिए उन पर ध्यान दिए बिना जो मैंने सोचा था वह नहीं हुआ ? इस गलत धारणा के साथ दूसरे गुरु का सहारा लेते हैं।

ऐसे लोग पूरी तरह से संध्या जीवन में होते हैं ।यही मुझे प्राप्त कर सकता हूँ, मैं हासिल कर सकता हूँ इस विश्वास के साथ गंभीरता से अभ्यास करते हैं तो हम उन्हें उन लोगों में गिन कर सकते हैं जो इस संध्या जीवन से बाहर निकल रहे हैं।

क्योंकि कई लोग ध्यान के इस मार्ग पर आते हैं। वहाँ गुरु बताते हैं कि मूर्ति भगवान नहीं है, बल्कि आत्मा ही भगवान है। लेकिन क्योंकि वे बचपन से ही पूजा करने के वजह से, यह उनकी आदत बन गई के वजह से, हर कोई यही काम कर रहा के वजह से और इसे डर के कारण से अगर वे ऐसा करना बंद कर देंगे तो क्या होगा, इसलिए वे पूजा करना

बंद नहीं कर सकते, भले ही उनके गुरु उन्हें स्पष्ट रूप से समझे बिना यह बता दें कि मूर्ति भगवान नहीं है। उन्हें संध्या जीवन में गिनते है।

इसी तरह वे गुरु कहते हैं कि मांस नहीं खाना चाहिए। लेकिन क्योंकि उन्हें बचपन से ही मांस खाने की आदत के वजह से, क्योंकि वे इसके स्वाद के बहुत आदी हो गए हैं, क्योंकि उनके परिवार में वाले, उनके आस-पास के सभी लोग इसे खाते हैं, क्योंकि डॉक्टर, कुछ बड़े लोग उन्हें बताते रहते हैं कि यह शक्तिशाली है यदि गुरु बताते भी वे इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझते नहीं छोड़ते। ऐसे लोगों ने संध्या जीवन में माना जाता है।

इसी तरह वे गुरु कहते हैं कि आपको ज्ञान हासिल करना चाहिए यानी सत्य जानना चाहिए। आप इस विचार के साथ जी रहे हैं कि यह शरीर आप हैं। आपने जो कुछ भी किया वह शरीर के लिए किया है। लेकिन वे कहते हैं कि तुम शरीर नहीं हो, तुम आत्मा हो। अब से वे कहते हैं, आत्मा के लाभ के लिए प्रयास करो, आत्मा के लिए जियो, और आत्मा को लाभ पहुंचने वाला ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाए।

लेकिन उन्हें यह बात स्पष्ट रूप से समझ में न आने के कारण चाहे आप कितना भी कहें कि वे आत्मा हैं.. मैं शरीर ही मानकर जीते रहते हैं। शरीर को ही महत्व देते हैं, और शरीर के ही लाभों के लिए प्रयास करते रहते हैं। सुनने पर उन्हें यह सही ही लगता है। फिर से शरीर वाली भ्रांति में पड़ जाते हैं यह भी संध्या जीवन का ही एक लक्षण है। और इतना ही नहीं, कुछ का पालन कर पाते हैं, कुछ का पालन नहीं कर पाते। यह भी संध्या जीवन ही है !पूरी तरह परिवर्तन आने पर ही वे दिन के जीवन में प्रवेश कर चुके माने जाते हैं।

देखिए 23 साल पहले पत्री जी से परिचय होने से पहले मैं वेंकटेश्वर स्वामी का प्रबल भक्त था। सब लोग मंदिर जाकर पूजा करते

रहते हैं, मनोतियाँ माँगते रहते हैं। लेकिन मैंने स्वयं वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर ही निर्माण किया गया था, अर्थात मैं उतना प्रबल भक्त था। बचपन से ही मैं हर साल लगभग एक या दो बार तिरुमला जाकर आता था।

इतनी भक्ति में डूबे हुए मुझे पत्री जी ने एक बार कहा कि मूर्ति भगवान नहीं है, आश्चर्यचकित हो गया। पत्री जी ने जो कुछ भी कहा स्वाभाविक रूप से समाज में जो कर रहा हैं उसके, जो आचरण कर रहा हैं उसके पूरी तरह से विपरीत होता है। यूँही कोई भी स्वीकार करने वाले नहीं है।लेकिन ऐसा नहीं था कि मुझे इस पर विश्वास नहीं था। इतना महान व्यक्ति कह रहा है, तो इसमें अवश्य कुछ न कुछ होगा इसी उद्देश्य से उनके बारे में अच्छी तरह से अध्ययन किया है। मैंने उन के बारे में बहुत अध्ययन किया है जो अब विरोधाभासी दिखाए दे रही हैं।

मेरे द्वारा लिखी गई सभी पुस्तकें भी उसी में जान लिया ही हैं। अगर आप वे सभी पुस्तकें पढ़ लें, तो आपके सभी संदेह पूरी तरह दूर हो जाएंगे। इस तरह बहुत सारी पुस्तकों को, उपनिषदों को पढ़ने से समझ में आया। उपनिषदों में, वेदों में कहा गया है कि आत्मा ही देव है लेकिन मूर्ति का कहीं कोई उल्लेख नहीं है।

क्या अन्नमाचार्य ने नहीं बता ? क्या नहीं किया ? क्या भक्त नहीं थे ? वे कहते हैं। अन्नमाचार्य जी ने ही स्पष्ट रूप से बताया है। वे बताया है कि ब्रह्म ही एक है, परब्रह्म ही एक है, और वह तुम्हारे अंतर में ही है। वे बताया है कि सभी को उस श्री हरे अंतरात्मा। तब और अच्छी तरह समझ में आया और हिम्मत भी आया है। तब से मैं तिरुमला नहीं गया। क्योंकि उस श्रीहरि के लिए मैं तिरुमला साल में केवल एक बार ही जाता था, पर अब यह सत्य समझ में आने के बाद मैं प्रतिदिन घंटों-घंटों उन्हीं पर ध्यान लगाए रखता हूँ।

और पहले मैं रात का जीवन में था, फिर धीरे-धीरे संध्या जीवन

में, और उसके बाद प्रयास से दिन के जीवन में भी पहुँचना हुआ।

लेकिन बहुत-से लोगों को अभी भी संदेह ही रहता है, अभी भी डर ही रहता है, वे कहते हैं दीप तो जलाना ही पड़ेगा है।

इसी तरह संध्या जीवन में ज्ञान प्राप्त करते हैं। ज्ञान पर रुचि है। लेकिन उस ज्ञान के बारे में कही गई बातें पूरी तरह समझ में न आने के कारण, डर की वजह से, आचरण नहीं होता है। इसलिए जानने पर भी फल प्राप्त नहीं कर पाते। सब कुछ जानते हैं लेकिन व्यवहार में परिवर्तन नहीं आता।और अगर जानने के बाद भी आचरण न करें तो, परिवर्तन न लाएँ, तो यह भी संध्या जीवन में रहने जैसा ही है।

इसलिए विवेक रखने वाले लोग सद्गुरुओं की बात को सुनकर उसे कभी भी नज़रअंदाज़ न करें।यदि आपको और कोई संदेह हों तो उन्हें दूर करने का प्रयास करें। अनेकों योगियों, महापुरुषों, महर्षियों ने अपना जीवन लगाकर अनेक सत्यों को जानकर उन्हें अनेक ग्रंथों में प्रस्तुत किया है। भगवद्गीता हो, योग वाशिष्ठ हो अगर आप यह सब अच्छी तरह अध्ययन करें, तो आप संध्या जीवन से भी बाहर निकलकर दिन के जीवन में आते हैं।

3) दिन का जीवन:

दिन का जीवन अर्थात यह पूरी तरह ज्ञान प्राप्त करने वालों का जीवन है। यदि आप पूर्ण ज्ञानवान हों, तो गुरु की कही बातों पर ध्यान देते हैं, ध्यान से सुनते हैं, लिखते हैं और उनका मनन करते हैं। इस तरह मनन करने के वजह से समझ भी करते हैं, समझकर आचरण भी करते हैं।

इसलिए वे पूर्ण ज्ञानी होकर वही करते हैं जो करना चाहिए, वही बोलते हैं जो बोलना चाहिए, और वही सोचते हैं जो सोचना चाहिए। गुरु का श्रद्धा से अनुसरण करने के वजह से, ध्यान-साधना को तीव्रता से करने के वजह से उनका ज्ञान अपार रूप से बढ़ जाता है, अग्नि की तरह

प्रज्वलित हो उठता है। ऐसी ज्ञान-अग्नि में वे अपने कर्मों को भी दग्ध कर लेते हैं, मुक्ति, मोक्ष भी प्राप्त कर लेते हैं।

इन तीनों प्रकार के लोगों के बारे में पत्री जी ने क्या कहा कि! वे अज्ञानी, अल्पज्ञानी और विज्ञानी होते हैं। अज्ञानी अर्थात रात्रि का जीवन जीने वाला, अल्पज्ञानी अर्थात संध्या का जीवन जीने वाला, विज्ञानी अर्थात दिन का जीवन जीने वाला।

और पत्री जी ने अज्ञान में रहने वालों के बारे में, पूरी तरह ज्ञान प्राप्त न करने वालों के बारे में, इसी तरह विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त करने वालों के बारे में भी बताया गया है। इसलिए उन्होंने जो विवरण दिया है, उसे जानकर हम उसे और गहराई से विश्लेषित करेंगे। उन्होंने क्या कहा ?

1) अज्ञानी अर्थात अज्ञान में रहने वाला है। यह शरीर ही मैं हूँ ऐसे जीवन जीने वाला है। शरीर सुखों के लिए जीवन जीने वाला है।

2) अल्पज्ञानी अर्थात कुछ जानते हैं। अर्थात यह जानते हैं कि यह शरीर मैं नहीं हूँ, बल्कि आत्मा ही मैं हूँ। जानते हुए भी ऐसे जीते हैं मानो यही शरीर ही मैं हूँ।

पत्री जी से परिचय होने से पहले हमारा जीवन, परिचय होने के बाद हमारा जीवन यदि गौर से देखें तो पूरी तरह से बदल गया है। सिर्फ हमारे परिवार के सदस्य, मित्र और परिचित ही नहीं, बल्कि सभी इस तरह हुए हमारे परिवर्तन से आश्चर्यचकित हो गए। और यह ऐसा क्यों बदल गया ? जब पत्री जी से परिचय हुआ तब उन्होंने कहा था कि तुम शरीर नहीं हो।

यह क्या है ? इस शरीर को मैंने एक नाम दिया है, मैं उसी नाम की नाम प्रसिद्ध हो जाए इतना व्याकुल पड रहा हूँ। ऐसी यह शरीर मैं नहीं हूँ, वे क्या कह रहा है ? मैं आश्चर्यचकित हो गया! तो मैं कौन हूँ ? यह पूछ लिया।

तब उन्होंने कहा तुम आत्मा हो, और भी आश्चर्य हुआ, आत्मा शब्द मैंने कभी नहीं सुना था।उन्होंने जो कहा वह कितना तक सही है यह जानने के लिए मैंने कई पुस्तकें पढ़कर, महान लोगों के वीडियो सुनकर तब मुझे पता चला कि पत्री जी ने जो कहा था, वही सत्य है। तब मेरी सोचने की तरीके ही बदल गए।

विचार-विमर्श के माध्यम से मैंने यह निश्चित कर लिया कि मैं शरीर नहीं, बल्कि आत्मा हूँ। और मैंने आत्मा ने इतने दिनों तक शरीर को ही इतनी महत्त्व दिया, शरीर को सुख पहुँचाने के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करके इतना धन कमाया, इसे ए.सी. में सुलाकर मुझे लगता था कि मुझसे अधिक भाग्यशाली कोई नहीं है, तरह-तरह के व्यंजन खिलाकर मुझे लगता था कि मैंने इसे बहुत संतुष्ट कर दिया है, सोचकर संतुष्ट हो जाता था।

इस शरीर की प्रशंसा हो जाए बहुत-से काम किए। इसे और सुखी बनाने के लिए मैंने पुण्य कर्मों को भी किए। इस तरह पूरे जीवन सिर्फ इसी शरीर के लिए ही कड़ी मेहनत की है। यानि इस शरीर को सुख देने के लिए फिर इसी शरीर को कष्ट दी है, यह बहुत अजीब है।

रात में कभी-कभार थोड़ी देर एसी चलाकर सोने के लिए, उस थोड़े-से सुख को शरीर को देने के लिए मैंने सुबह से शाम तक इसी शरीर को कष्ट दी है।

कोई भी ऐसे ही हैं, कमाने वाले कमा रहे हैं, व्यापार करने वाले व्यापार कर रहे हैं, और नौकरी करने वाले नौकरी कर रहे हैं। और महिलाएँ तो घर का काम भी कर रही हैं और नौकरी भी कर रही हैं।

यह सब क्यों कर रहे हैं ? क्यों कड़ी मेहनत कर रहे हैं ? यानी इस शरीर को सुख देने के लिए ही।

बहुत-से लोग सोचते हैं कि अमेरिका जाने से सुविधाएँ ज़्यादा

मिलेंगी, अच्छी तरह सुख से रह सकेंगे। बेचारी अगर भारत में रहती तो कामवाली मिल जाएगी। उस घर में झाड़ू लगाना, बर्तन धोना कामवाली करके दे देती है। लेकिन अगर यह सोचकर कि अमेरिका का लड़का है करोड़ों दहेज देकर शादी करते हैं तो वहाँ जाकर वे जो काम करते हैं वह क्या हैं ! घर की सफ़ाई करना, टॉयलेट साफ़ करना, सारा खाना खुद बनाना, और बाज़ार जाकर सारी चीज़ें खुद ही करते हैं। यह क्या सुख है समझ नहीं आता।

अमेरिका रिश्ता आने से उछल पड़ते हैं। जो भी हो यहाँ भी कड़ी मेहनत कर रहे हैं, वहाँ जाकर भी कड़ी मेहनत कर रहे हैं। और इस तरह शरीर को सुख देने के लिए फिर उसी शरीर को कष्ट दे रहे हैं। इसीलिए वशिष्ठ महर्षि जी ने कहा है, सुख थोड़ा है, कठिनाइयाँ पहाड़ जैसा है।

कष्टों का अर्थ यह नहीं है कि बीमारी के आने से, समस्याएँ के आने से होने वाले कष्ट नहीं। रोज़ के काम खुद करने पर भी बहुत कड़ी मेहनत करनी ही पड़ती है। और बच्चे हों तो उन पर भी ध्यान देना पड़ता है। उन्हें पालना-पिसना, लाभार्थियों को बनाना कितना कठिन है! उन्हें पढ़ाना, स्कूलों में छोड़ना एक मिशन की तरह काम करना चाहिए।

तो क्या उतना कड़ी मेहनत करके , इतने कष्ट सहते हुए, शरीर को इतना सुख दे दिया तुम ही शरीर हो यानी ! असल में वह शरीर तुम हो ही नहीं। जब मुझे यह समझ में आया कि मैं यह शरीर नहीं हूँ, तब मैंने अपने आप से बहुत-से प्रश्न पूछे।

तो जब मैं शरीर नहीं हूँ तो अब तक जो भी मैंने शरीर के लिए कमाया है क्या यह मेरे लिए आत्म के लिए उपयोगी होगा ? ऐसा प्रश्न मैंने स्वयं से पूछा। आप भी इसी तरह के प्रश्न स्वयं से करने चाहिए। पत्री जी, मुझे कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है, आपको स्वयं अंतर्मंथन करना चाहिए, अपने विवेक का उपयोग करना चाहिए। सोचने पर यह बात

समझ में आई कि इन करोड़ों में से एक पैसा भी मेरी आत्मा के लिए उपयोगी नहीं है।

अर्थात अब समझ में आया कि इतने दिनों से की गई सारी कड़ी मेहनत व्यर्थ ही थी। केवल शरीर के लिए ही नहीं, बच्चों के लिए भी कड़ी मेहनत की थी। पूरा ज्ञान प्राप्त होने के बाद तुमने अपना जीवन त्यागकर केवल बच्चों के लिए ही कड़ी मेहनत की! चलो छोड़ो वे बच्चे सच में तुम्हारे ही बच्चे हैं? यानी वे भी मेरी ही तरह इस पृथ्वी पर आए हुए आत्माएँ ही हैं। वे किसी लोक से आए हैं, मैं भी किसी लोक से आया हूँ। फिर बाद में वे भी किसी लोक में चले जाएँगे, मैं भी किसी लोक में चला जाऊँगा।

इस शरीर को छोड़ देने के बाद उनका और मेरा कोई संबंध नहीं रहेगा। यह समझ में आने के बाद, संयुक्त परिवार में रह रहे हमारे बच्चों को अलग भेज दिया गया। मेरे बच्चों के रूप में जन्म लेने से, उन्हें मेरी संपत्ति पर अधिकार हासिल कर लिया है, इसलिए वह संपत्ति उन्हीं की है, इसी कारण उनका जो हिस्सा था, वह उन्हें दे दिया गया।क्योंकि मेरे बाद का अधिकार भी उन्हीं का है, इसलिए अपने बाद वह सब उन्हें मिल जाए इस तरह लिखकर मैंने उन्हें बाहर भेज दिया। इस तरह मैंने देह के बंधनों से स्वयं को मुक्त कर लिया।

कम से कम अब से तो मुझे अपने बारे में अर्थात आत्मा के बारे में कड़ी मेहनत करना चाहिए, आत्मा को लाभ पहुँचाने वाले कार्य करने चाहिए। आत्मा की उन्नति के लिए प्रयास करना है यह निश्चय करके, मैंने अपने सभी व्यापार छोड़ दिए, और यदि मेरे पास कोई पद थे तो उन्हें भी छोड़ दिया पूरी तरह से आत्मा को लाभ पहुँचाने वाले कार्यों पर ही अपना ध्यान केंद्रित कर लिया।

तो मुझे आत्मा को लाभ पाने के लिए! तो क्या करना चाहिए?

अर्थात पत्री जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि तुम्हें ज्ञान अर्जित करना चाहिए, क्योंकि तुम्हें लाभ पहुँचाने वाली एकमात्र ज्ञान ही है। जब तुम शरीर छोड़ दोने के बाद, तो तुम्हारे परिवार वाले ही तुम्हारे शरीर को जलाकर राख कर देंगे, उसके बाद जो रहता है, वह केवल आत्मा ही है।

जैसे पृथ्वी पर सभी लोग किसी महल जैसे भवन में प्रवेश करना चाहते हैं, उसी तरह जो भी ऊपर गई हैं आत्माएँ भी किसी न किसी उच्च लोक तक पहुँचने की ही आकांक्षा रखती हैं। मैं समझ गया कि ऐसे लोकों को प्राप्त करना चाहिए यानी ज्ञान हासिल करना चाहिए। मैं समझ गया कि जैसे पृथ्वी पर धन कमाने वाला व्यक्ति कितना महान है, उसी प्रकार शरीर रहते हुए ज्ञान हासिल करने वाला ऊपर के लोकों में उतना ही महान होता है। अब मैं रात-दिन उसी ज्ञान की हासिल करने के लिए अपना जीवन लगा रहा हूँ।

पत्री जी को अपना आदर्श बना लिया है। उन्हें जब भी समय मिलता था, वे कोई-न-कोई काम करते थे, कक्षाओं में जाते थे, कौन-कौन कौन-सा काम करना है ये सारी व्यवस्थाएँ भी स्वयं ही देखते थे। और जब भी उन्हें थोड़ा समय मिल तो वे ध्यान जगत, स्पिरिचुअल इंडिया पुस्तकों का संशोधन किया करते थे। पुस्तकें भी लिखा करते थे। वे कई कांसेप्टों को रिकॉर्ड करके वीडियो के रूप में रिलीज़ करते हम सभी को उपलब्ध करवाता था। उन्हीं पुस्तकों को वजह से उन्हें सुनने की वजह से ही हम इस स्ततर तक पहुँचे हैं, इसलिए वही काम मैं भी कर रहा हूँ।

मैं जूम के माध्यम से संदेश दे रहा हूँ, बाहर जाकर क्लासें भी ले रहा हूँ, और जब भी समय मिलता है, किताबों की करेक्शन कर रहा हूँ। यह सब क्यों कर रहा हूँ यानी ? आत्मा होने के नाते मैं, मेरा उद्देश्य, आशय यही है कि मैं अपना समय व्यर्थ किए बिना अपनी आत्मा लाभ के लिए कुछ न कुछ काम करना चाहिए।

इसलिए सोचिए आपको मिला हुआ यह अवसर को व्यर्थ न जाने दें। क्यों व्यर्थ की बातचीतों में अपना सारा समय बर्बाद करते हैं? टीवी देखने से, मोबाइल में समय बिताने के लिए यूट्यूब देखने वजह से तुम्हें दिया गया सारा समय तो व्यर्थ ही कर रहे हो, है न?

उसके बजाय यदि आप आत्मा को लाभ पहुँचाने वाले कार्य करेंगे तो, ज्ञान बढ़ाने वाले कार्य करेंगे, तो आपका ज्ञान बढ़ेगा। अब आप जो भी मनोरंजन पूरे कर रहे हैं! जो भी इच्छाएँ पूरी कर रहे हैं! ये सब तो आप पिछले जन्म में भी अनुभव कर चुके हैं। पहले जन्म में सब कुछ था, पति था, पत्नी थी, बच्चे थे, परिवार था, कमाई थी, सुख-सुविधाएँ थीं। हर जन्म में कठिनाइयाँ थीं, हर जन्म में भोग-सुख थे यह सब अनुभव कर चुके हैं। इतने जन्मों का अनुभव कर लेने के बाद भी क्या आपकी तृप्ति नहीं हुई?

एक बार सोचकर देखिए! मैं निशित रूप से बता रहा हूँ कि ज़ूम में आए आप सब 350 से 360 जन्म पार कर चुके ही हैं। और आपमें से कुछ लोग तो उससे भी अधिक होंगे। और अभी भी ये मोह-माया क्यों? यानी तुम्हें सबको छोड़ देना चाहिए क्या? सब कुछ छोड़ देना चाहिए क्या? कोई जिम्मेदारियाँ नहीं लेना चाहते? यह आप कह सकते हैं।

सब कुछ देखो, मैं नहीं चाहता। पर जो थोड़ा-बहुत खाली समय होता, उसे अपने लिए अर्थात आत्मा के लिए लगाएं, अपनी आत्म के फायदे के लिए कड़ी मेहनत करें, प्रयास करे, खाली समय को व्यर्थ न करें। जो मैं स्वयं आचरण कर रहा हूँ, वही आपको भी सिखा रहा हूँ। 23 वर्षों से वह सब कुछ कर रहा हूँ जो मैं जितना तक कर सकता हूँ, जितना कर सकता हूँ, जितने प्रकार से कर सकता हूँ। चूँकि तुम सब मेरी साथ आत्माएँ हो, आप ज्ञान हासिल करना है, ऊपर जाने के बाद तुम्हें फायदा होना चाहिए, उच्च लोकों तक पहुँचना है, इसीलिए आपको प्रोत्साहित

कर रहा हूँ, आपकी आत्म ज़िम्मेदारी याद दिला रहा हूँ।

यहाँ दो प्रकार की जिम्मेदारियाँ हैं, शरीर की जिम्मेदारी, आत्मा की जिम्मेदारी। पत्री जी ने दोनों में बैलेंस करने को कहा। शरीर की जिम्मेदारी का अर्थ है परिवार का ध्यान रखना, बच्चों को संभालना, पैसा कमाना है। यदि स्त्री है तो उसे पति का ध्यान रखना चाहिए, यदि पुरुष है तो उसे पत्नी का ध्यान रखना चाहिए, माता-पिता हों तो उनका भी ध्यान रखना चाहिए, ये सब शरीर की जिम्मेदारियाँ हैं।

आत्मा की जिम्मेदारी का अर्थ है ज्ञान हासिल करना चाहिए। ज्ञान का मतलब है जो हमारी आँखों से दिखाई नहीं देतीं उनके बारे में जानना। उनके बारे में जितना अधिक आप जानेंगे तो आप उतने ही ज्ञानी बनेंगे। इसीलिए पत्री जी कहते थे कि मृत्यु के बाद क्या होता है, यह किसी को नहीं पता, इसलिए उसके बारे में जानिए। इसीलिए अब मैं भी उसी पर अधिक ध्यान दे रहा हूँ। यदि मृत्यु के बाद आत्मा को उच्च लोकों तक पहुँचा सकें, तो आपने पृथ्वी पर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर चुके होंगे, वही आत्मा की जिम्मेदारी है।

आप कितना भी धन कमा लें, आप संतुष्ट नहीं होंगे। इसी तरह, तुम्हें आत्मा को, ज्ञान पाने के लिए बिना संतुष्टि के कड़ी मेहनत करना चाहिए। मैं अनेक राज्यों में घूम रहा हूँ, ज्ञान की इच्छा रखने वाले लोग हर जगह मौजूद हैं बिल्कुल भी कमी नहीं है।

सबको नहीं तो कम-से-कम उन्हें यह ज्ञान पहुँचा सकें, तो इससे बढ़कर और कुछ चाहिए ही नहीं, इसी लिए मैं घूम रहा हूँ। पत्री जी की उम्र जब मेरी उम्र बराबर हुए तब उनके साथ हमेशा दो लोग रहते थे, वह किसी के बिना नहीं जाएगा।

परसों जब मैं धारवाड़ गया था, तो साई लीला ने कहा आप तो कुछ परवाह किए बिना लगातार घूम रहे हों। आप लड़खड़ा रहे हैं, शायद

आपको पता भी नहीं ! हमे यह पता चल रहा है। अगर आप भी किसी को अपने साथ ले जाना चाहते हैं आप मना कर देते कहते हो ऐसा साई लीला ने कहा। चाहें कुछ भी हो जाए लेकिन जब तक इस पृथ्वी पर हूँ, 10 लोगों को ज्ञान देना चाहिए, यही मेरी आकांक्षा है।

पत्री जी ने लेलाडक गए है, जबकि उन्हें पता था कि वे मर जाएंगे। कड्ताल में हमारे ट्रस्टी सभी ने मना किया, फिर भी उन्होंने परवाह नहीं की।

अगर उनकी फ़्लाइट रद्द हो जाती तो वापस आ सकते थे, नहीं तो वहीं रुक सकते थे। लेकिन मुझे एक हेलीकॉप्टर चाहिए, मैं उसी में जाऊँगा उनकी दृढ़ता देखिए। अचानक किसी फ़्लाइट में दो टिकटें मिल गईं। वहाँ जाने के बाद दिल्ली में वे बीमार पड़ गए, तो दो-तीन दिन वहीं रुके और बाद में वापस आ गए। वापस आने के बाद वे ज़्यादा दिन नहीं रहे।

और ऐसी स्थिति में भी आराम किए बिना कितनी मेहनत की। अगर हम सो गए तो कैसे ? इसीलिए मैं कर रहा हूँ, आपको मैं इतना कष्ट करने के लिए नहीं कहूँगा। पत्री जी ने जैसे कहा था कि 50% शरीर के लिए और 50% आत्मा के लिए समय बाँटें वैसा मैं आपसे नहीं कह रहा हूँ लेकिन, कम से कम 75% शरीर के लिए देखिए, और 25% आत्मा के लिए समय निकालें इतना तो मैं कह रहा हूँ। मेरी बातें आपको ऊपर जाने के बाद समझ में आएँगी।

इसलिए दिन का जीवन यानी पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वालों का जीवन। जिसने वह ज्ञान हासिल कर लिया है उन का व्यवहार कैसा होता है ? इसी तरह जिसने ज्ञान हासिल नहीं किया है अज्ञान में रहकर रात के जीवन में रहने वाले व्यक्ति का व्यवहार कैसा होता है ? इसे थोड़ा जान लेते हैं।

1. स्वाभाविक रूप से ज्ञानी व्यक्ति सांसारिक विषयों के प्रति विरक्ति रखता है,; आत्मा से संबंधित विषयों के प्रति रुचि रखता है,; लेकिन अज्ञानी व्यक्ति सांसारिक विषयों में रुचि रखता है,; आत्मा से संबंधित विषयों के प्रति विरक्ति दिखाता है।

2. ज्ञानी व्यक्ति तो आध्यात्मिक मार्ग में रहता है; ऐसे ज्ञानी व्यक्ति को ज्ञान से आकर्षित होना चाहिए। लेकिन अज्ञानी व्यक्ति सांसारिकता में रहता है, ऐसे अज्ञानी को धन से आकर्षित होना चाहिए।

3. ज्ञानी व्यक्ति दुख में भी आनंदपूर्वक जीवन जीता है,; लेकिन अज्ञानी व्यक्ति तो जिन परिस्थितियों में खुश रहना चाहिए, उनमें भी दुखी रहता है।

4. ज्ञानी कोई आशा नहीं करता।

5. ज्ञानी व्यक्ति अपनी इच्छाओं को नियंत्रण में रखता है, लेकिन अज्ञानी व्यक्ति इच्छाओं का दास बन जाता है।

6. ज्ञानी व्यक्ति अपना ज्ञान को बढ़ाता है, वही ज्ञान उसकी रक्षा करता है, लेकिन अज्ञानी धन को बढ़ाता है, और उस धन की रक्षा उसे स्वयं ही करनी पड़ती है।

7. ज्ञानी अपने पास जो है, उसी में संतुष्ट रहता है, लेकिन अज्ञानी को कितना भी मिले, वह कभी संतुष्ट नहीं होता।

8. ज्ञानी अपने पास जो है, उसे बाँटता है,; लेकिन अज्ञानी कुछ भी बाँट नहीं सकता।

9. ज्ञानी दिए बिना रह नहीं सकता,अज्ञानी दे नहीं सकता।

10. आत्मज्ञानी के लिए सब एक समान होता है,; लेकिन अज्ञानी सबको अलग-अलग मानता है।

11. ज्ञानी सभी से प्रेम करता है और अपने लोगों सहित सभी को समान रूप से देखता है। लेकिन अज्ञानी सभी से द्वेष करता है और अपने

लोगों को ही विशेष मानता है। अर्थात वह राग–द्वेष प्रदर्शित करता है।

12. ज्ञानी दूसरों के बारे में सोचता है, लेकिन अज्ञानी केवल अपने बारे में ही सोचता है।

13.ज्ञानी दूसरों के आनंद के लिए काम करता है, जबकि अज्ञानी सिर्फ़ अपने आनंद की ही परवाह करता है।

14. ज्ञानी लोक–कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन करता है, उन्हें प्रोत्साहित करता है,; उनमें सहयोग भी देता है,; लेकिन अज्ञानी न तो प्रोत्साहित करता है और न ही सहयोग करता है।

क्या भी हो, यह याद रखिए कि हर किसी को दिन का जीवन जीना चाहिए।

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ.................................. Rs.80/-
3) ज्ञान माला.. Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................ Rs.70/-
5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?........... Rs.60/-
6) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
7) महात्माओं का संदेशों............................... Rs.50/-
8) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
9) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-

सात शरीरों के बारे में

अज्ञान की स्थिति में रहने वाले मनुष्यों को जानते है आँखों को दिखाई देने वाला शरीर एक है ।लेकिन हमारी आँखों को दिखाई न देने वाले और भी छह शरीर होते हैं। वे ज्ञान होने वाला को ही जानते हैं। इस विषय अज्ञान में रहने वाले को नहीं जानते हैं। हम सभी ज्ञान बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अर्थात हम आँखों से दिखाई न देने वाली बातों को भी जानने का प्रयास कर रहे हैं। जानना भी ज़रूरी है! वरना आपका पूरा जीवन भ्रम ही रहेगा, अंधकार ही रहेगा।

इसलिए मौजूद एक ही शरीर नहीं है, भीतर गहराई में छः शरीर मौजूद हैं। इसलिए अब इन सभी सात शरीरों के बारे में जान लेते हैं।

1) फिजिकल बॉडी यानी स्थूल शरीर। इसे शंकराचार्य जी ने ''अन्नमय कोष'' कहते हैं।

2) एथेरिक बॉडी को यानी कांतिमय शरीर। इसे प्राणमय कोष भी कहा जाता है।

3) आस्ट्रल बाडी या मेंटल बाडी को यानी सूक्ष्म शरीर या भावनामय शरीर। इसे मनोमय कोष भी कहा जाता है। इन सबको हमें गहराई से क्यों जानना चाहिए यानी हर योगेश्वर एक एक को कहते रहते हैं। अगर हम यह सब जान लें, तो भ्रमित नहीं होंगे।

अगर हम इसे नहीं जानेंगे तो भ्रमित हो जाते हैं कि उन्होंने कुछ और कहा और इन्होंने कुछ और कहा। इसीलिए हमें इन सबको अच्छी तरह से जानना चाहिए। एक तरह से कहें तो बात समझ में अच्छी तरह बैठनी चाहिए। अगर बात ठीक से समझ में न आए, तो आगे बताई जाने वाली बातें आपको समझ में नहीं आएंगी।

4) काजल बॉडी मतलब कारण शरीर। इसे ही शंकराचार्य जी

विज्ञानमय कोष कहते हैं।

5) स्पिरिचुअल बॉडी यानी महाकारण शरीर। इसे आनंदमय कोश भी कहते हैं।

6) कॉस्मिक बॉडी यानी विश्वमय शरीर। इसे विश्वमय कोश भी कहते हैं।

7) निर्वाणिक बॉडी यानी निर्वाणमय शरीर। इसे निर्वाणमय कोश भी कहते हैं।

हम इसी प्रकार सात शरीरों से बने हुए हैं।आत्मा के ऊपर ये सात कोश हैं! दिखने वाले इस भौतिक शरीर के भीतर ही अंतर्लीन रूप से ये छह कोश हैं। इन्हें समझना चाहिए। अगर जब योगीयों ने किसी भी क्लास में बताने समय, इनका उदाहरण देते हैं, तो यदि तुम्हें इनकी समझ होगी तो वह विषय तुम्हें बहुत अच्छी तरह समझ में आएगा।वरना समझ में ही नहीं आएगा, और लगेगा कि यह क्या कह रहे हैं।

इतना ही नहीं मनुष्य की चेतना भौतिक शरीर में केंद्रित रहती है, अर्थात जाग्रत अवस्था में होती है, तब वह इस स्थूल जगत में घूमता है कर्म करते रहते हैं। अगर वह चेतना भौतिक शरीर में होती है, तो उसे मनुष्य कहा जाता है।

अर्थात मनुष्य जाग्रत अवस्था में हर दिन कर्म करता रहता है। इस स्थूल ब्रह्माण्ड में जैसा कि हमने कहा, इस ब्रह्माण्ड में हमें दो प्रकार के लोक दिखाई देते हैं। सभी स्थूल लोकों को मिला दिया जाए तो उसे स्थूल ब्रह्माण्ड कहा जाता है। सभी सूक्ष्म लोकों को मिला दिया जाए तो उसे सूक्ष्म ब्रह्माण्ड कहा जाता है। ये स्थूल लोक आँखों से दिखाई देते हैं, लेकिन सूक्ष्म लोक आँखों से दिखाई नहीं देते।

इसी तरह, इस स्थूल शरीर में प्रवेश करने से पहले, अर्थात् आत्मा के प्रवेश करने से पहले ऊपर की लोक में एक योजना बनाकर आप नीचे

आते हैं। धरती पर आकर एक माँ के गर्भ में बन रहे शरीर में प्रवेश करके आप जन्म लेते हैं। जन्म लेने के क्षण से लेकर शरीर छोड़ने तक, मनुष्य विभिन्न प्रकार के कर्म करता ही रहता है। पाप कर्म करते हैं, पुण्य कर्म करते हैं। जो थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, आत्मा कर्म करते हैं, उसे ही भौतिक जीवन कहते हैं।

इस प्रकार शरीर में रहकर कर्म करने वाले जीवन को भौतिक जीवन कहते हैं, इसे प्रापंचिक जीवन भी कहते हैं। इस प्रकार ऊपर के लोकों में जितनी तक आयु निर्धारित की गई है, उतने समय तक करता ही रहता। जब आपकी निर्धारित आयु पूर्ण हो जाती है, तो आप को मृत्यु घटित होती है। तब इस स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर बाहर निकल जाता है। इस सूक्ष्म शरीर के, स्थूल शरीर के बीच एक प्रकाशमय शरीर, यानी एक प्राणमय शरीर होता है।

यदि भौतिक शरीर को नहीं जलाया जाता, तो उसी से चिपका रहता था। दो-तीन दिन तक रहकर बाद में अपने-आप गिर जाती है। यदि वह भौतिक शरीर को जल गया, तो गायब हो जाता है।

तब उन सूक्ष्म शरीर के साथ उन्हें सूक्ष्म लोकों में ले जाने के लिए आए हुए सहायकों के साथ, पृथ्वी पर अपने कर्मों के अनुसार वे उन सूक्ष्म लोकों तक पहुँच जाते हैं। पत्री जी ने हमें बताया कि पाप करने वाले भुवर्लोक में, और पुण्य करने वाले स्वर्लोक में पहुँचने के बाद कुछ दिन विश्राम करने के बाद वे अपने उसी जन्म में पृथ्वी पर किए हुए कर्मों को देखते हैं।

अरे जो करना चाहिए था वह तो किया ही नहीं, और जो नहीं करना था वही कर बैठे ऐसा सोचकर पछताते हैं। पश्चाताप करके इस बार फिर से शरीर लेकर अपनी इच्छित साधना या कार्य को पूरा करूँगा ऐसा निर्णय करके वे अपने पास मौजूद सूक्ष्म शरीर को अर्थात मनोमय शरीर

को सूक्ष्म लोकों में ही छोड़ देते हैं। यदि वह (मनोमय शरीर) साथ हो तो वे उन लोकों को पार करके ऊपर के लोकों, यानी जनलोक तक नहीं पहुँच सकते।

इस प्रकार सूक्ष्म शरीर को छोड़कर वे कारण लोक को, अर्थात जनालोक में पहुँच जाते हैं। वहाँ पहुँचने के बाद वे अपने ही बिंब को, अर्थात सूत्रात्मा को या कारण शरीर को पहुँच जाते हैं। वास्तव में वह बिंब कभी भी कारण लोक को नहीं छोड़ता। भूलोक में आने पर भी, समान्तर लोकों तक पहुँच चुका प्रतिबिंब फिर से अपने ही मूल बिंब को पहुँच जाते है।

उसी से उत्पन्न हुआ एक प्रतिबिंब ही भूलोक में आता है, कर्म करता है, शरीर छोड़ता है, सूक्ष्म लोकों में अपने कर्मफलों का अनुभव करता है और अंततः पुनः अपने ही मूल बिंब में लीन हो जाता है। इस सम्पूर्ण यात्रा का फल केवल ज्ञान ही है।

पत्री जी द्वारा दिया गया यह संदेश समझने में मुझे बहुत समय लगा। मुझे यह समझ में आया कि पत्री जी के पास अपार ज्ञान है, लेकिन हम जो पूरी तरह समझ नहीं सकते, उसे वे नहीं बताते; वे हमें उतना ही कहते हैं, जितना हम समझने में सकते हैं।अगर वह और भी गहराई से बताएँ तो हमें ही भ्रम हो जाता है।

यह सब पत्री जी द्वारा बताया गया ज्ञान ही है। इन बातों को कौन जान सकते है! हम कह चुके हैं कि पूर्णात्मा से अलग हुई आत्मा को अंशात्मा कहते हैं। यही अंशात्मा मानव शरीर में प्रवेश करती है, तो तब उसे जीवात्मा कहते हैं।

यह अंशात्मा मानव शरीर में प्रवेश करने से पहले कारण लोक तक पहुँचता है। कारण लोकों में स्थित उसी को ही बिंब कहते हैं। उसी से उत्पन्न हुआ प्रतिबिंब ही पृथ्वी पर माता के गर्भ में बनने वाले शरीर में

प्रवेश करके जन्म लेता है। कर्म करती है, और इस तरह जैसे-जैसे जन्म में बढ़ते है उसका ज्ञान भी बढ़ाता है।

इस प्रकार वह बिंब जब तक कारण लोकों में रहता है, तब तक वह जन्मों को लेते रहते हैं। जब भी ज्ञान बढ़ता रहता है, तब वह उस स्थिति से आगे निकल जाता है। यह सब अच्छी तरह समझने के लिए, मरने से पहले ही मर जाना चाहिए नामक पुस्तकें अच्छे से पढ़नी चाहिए।

इस प्रकार जानने के लिए अभी बहुत कुछ बाकी है। वह सब जानने के लिए तो अभी कई जन्म लगेंगे, इसलिए उस ज्ञान को सिखा सकने वालों का आश्रय लेना चाहिए और उन्हें दृढ़ता से पकड़ना चाहिए। उस ज्ञान को समझना चाहिए यानी सबसे पहले अपनी बुद्धि को अच्छी तरह विकसित करना चाहिए। तब वे जो कहते हैं वह समझ में आता है, अन्यथा चाहे कितना भी समझाया जाए, समझ में नहीं आता।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि पत्री जी जैसे गुरु मिलना बहुत कठिन है। ऐसा गुरु मिलने के बाद भी यदि उनके द्वारा सिखाए गए ज्ञान को कोई समझ न पाए, तो उससे अधिक दुर्भाग्यशाली कोई नहीं होता। उन्होंने अपार ज्ञान का सिखाया था, उस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए २६ श्वास पर ध्यान' करने को कहा।

इसे छोड़कर अगर म्यूजिक, गाइडिंग, बड़े-बड़े साउंड, रिकॉर्डिंग्स लगाओगे, तो उन्हें क्या ज्ञान प्राप्त होगा ? वे क्या जानेंगे। इसलिए अब तो कम-से-कम ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करिए।

इस प्रकार हर जन्म में यदि आत्मा थोड़ा-थोड़ा ज्ञान को अर्जित करती रहे, तो यानी हासिल कर लेती है तो क्रमश: एक-एक लोक को पार करते हुए पूर्ण आत्मज्ञान प्राप्त होने पर कारण लोकों को छोड़कर यानी अब तक होने उस जनालोक को छोड़कर महाकारण लोकों में प्रवेश करती है। जब तक यह बिंबात्मा कारण लोकों में रहती है, तब तक जन्म

जरूरी है। उसके बाद इच्छा हो तो आती है, नहीं तो नहीं आती।

इसलिए खुद को पूरी तरह से जानना ही जन्म-रहित अवस्था को प्राप्त करना है, अर्थात मोक्ष को प्राप्त करना है। अर्थात इस प्रकार प्राप्त करने के वजह से यह अंशात्मा जिस पूर्णात्मा से अलग हुई थी, उसी पूर्णात्मा के साथ सारूप्य को, सामीप्य को, सालोक्य को और अंततः सायुज्य को दीर्घकाल में प्राप्त करती है। अर्थात् अंशात्मा की यात्रा पूर्ण हो जाती है। एक प्रकार से कहा जाए तो इसे पहली यात्रा माना जा सकता है; इसके बाद और भी यात्राएँ होती हैं।

अब इस प्रकार प्राप्त हुई मोक्ष को, अर्थात मुक्ति, को चार प्रकारों में समझाया गया है। आइए उन्हें थोड़ा विस्तार से समझते हैं। यहाँ हमने कहा है कि मुक्तियाँ चार प्रकार की होती है।

1) सारूप्य मुक्ति, 2) सामीप्य मुक्ति, 3 सालोक्य मुक्ति, 4) सायुज्य मुक्ति

1) सारूप्य मुक्ति यानी जो सभी पापों से मुक्त हो गया है भगवान के सारूप्य को यानी उसके स्वरूप को प्राप्त करता है। वह भगवान बन जाता है इसी को सारूप्य मुक्ति कहते हैं।

2) सामीप्य मुक्ति यानी ब्रह्मज्ञान की आकांक्षा रखने वाला मनुष्य, अन्य चिंताओं से मुक्त होकर अर्थात सांसारिक विषयों के बारे में सोचे बिना सदाचारी बनते हुए, धीरे-धीरे भगवान की सामीप्यता को, यानी भगवान के करीब पहुँच जाता है। अर्थात् जहाँ पूर्णात्मा रहती है उस सत्यलोक में पहुँच जाता है। जो भगवान को पाने के लिए सब कुछ करता है, उसी को सदाचारी कहते हैं।

भगवद्गीता में 8 अध्याय 16 श्लोक में हमारे लिए यह कहा गया है कि

श्लो।। आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ (भ.गी.8-16)

ता:- अगर तुम उस ब्रह्मलोक जैसे लोक, अर्थात तपोलोक में भी चले जाओ, फिर भी वापस पृथ्वी पर ही आना पड़ता है। लेकिन यदि तुम उस सत्यलोक को पहुँच जाओगे जहाँ मैं स्थित हूँ, तो फिर तुम्हें दोबारा मानव लोक में आने की कोई आवश्यकता नहीं रहती। इसी को मुक्ति, मोक्ष कहते हैं , इसे ही सामीप्य मुक्ति कहते हैं।

3) सालोक्य मुक्ति यानी ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य भगवान तक पहुँचने योग्य हो जाता है। इसके द्वारा भी, यदि जहाँ भगवान है उस मनुष्य सत्यलोक तक पहुँच सकता है। इसे सालोक्य मुक्ति कहते हैं। अंत में होता भी वही है, ज्ञान अर्जित करते-करते पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके, उस पूर्णात्मा अर्थात भगवान के निवासस्थल सत्यलोक को पहुँच जाना ही है।

4) सायुज्य मुक्ति यानी गुरु द्वारा उपदेशित ध्यान-मार्ग में आत्मा से जुड़कर, भ्रमर-कीटक न्याय के अनुसार, अर्थात हमेशा रमण महर्षि की तरह, रामकृष्ण परमहंस की तरह, वे महीनों और वर्षों तक उसी अवस्था में बने रहते हैं।

शिरडी बाबा ने भी कहा है न कि मैं 13 वर्षों तक अपने गुरु के साथ रहा, पत्री जी ने भी कहा है कि मैं एक जन्म में पूरी तरह ध्यान में थे।

अर्थात कीड़े को कोकून में डालकर झुनझुना की आवाज निकालने से कीड़ा भी भ्रम बन जाता है। इसी प्रकार आत्मा के साथ महीनों और वर्षों तक उसी अवस्था में बने रहने से, आत्मा की समस्त शक्तियाँ उन्हें मिल जाती हैं और वे उसी भगवान जैसे बन जाते हैं। जिस प्रकार कीट भ्रमर बन जाता है, उसी प्रकार यह मानव भी माधव बन जाता है।

यदि लोहे के एक टुकड़े को चुम्बक के साथ लगाकर रखा जाए, तो कुछ दिनों बाद वह लोहे का टुकड़ा भी चुम्बकीय शक्ति प्राप्त कर लेता है और स्वयं भी लोहे के अन्य टुकड़ों को आकर्षित करते हैं। इस प्रकार वह भी भगवान की स्थिति को प्राप्त करता है। अर्थात वह भगवान के साथ सायुज्य को प्राप्त करता है, इसी को सायुज्य मुक्ति कहते हैं।

इस प्रकार इन मुक्तियों में से किसी एक को भी हासिल करने तो वह परम आत्मा के रूप में, तारे के रूप में, शाश्वत के रूप में, स्वयं के रूप में, आदित्य के रूप में, पूरी दुनिया को ज्ञान देने वाले के रूप में, शक्ति देने वाले के रूप में बना रहता है। अब इस यात्रा में साधक अपनी साधना के अनुसार एक-एक बार हर दुनिया में जाता है।

उस स्थिति को हासिल करने वाले लोग जिस-जिस लोक की सीमा होती है, उसके अनुसार अपने-अपने शरीर को स्वतः बदलते हुए आगे बढ़ते जाते रहते हैं।

उदाहरण:- हमारे पास शार रॉकेट सेंटर में रॉकेट्स जाते रहते हैं। वह रॉकेट यात्रा करते-करते अपनी कक्षा यानी अपना मार्ग बदलने के लिए बाध्य हो जाता है।

और वैसे ही नहीं जाता। उसी कभी इधर, कभी उधर मुड़ना पड़ता है। तब उस तक ईंधन के रूप में उपयोग किए गए भाग को वहीं छोड़ देता है। उसी प्रकार लोक के अनुसार आत्मा भी अपना शरीर बदलती रहती है।

क्योंकि जैसे-जैसे कोई ऊपर की लोकाओं यानी ऊर्ध्व लोकों की ओर पहुँचते जाते हैं, वे लोक अत्यंत सूक्ष्म होती जाती हैं। जितना जितनी सूक्ष्म होती हैं, उतना ही ऊपर के लोकों को जाता है।

इसीलिए आप ध्यान देन चाहिए हमने कुल सात शरीरों का जिक्र किया है। सबसे स्थूल भौतिक शरीर होता है, उसके बाद प्राणमय शरीर, फिर मनोमय शरीर आता है, उससे भी अधिक सूक्ष्म कारण शरीर होता है, उससे भी अधिक सूक्ष्म महा-कारण शरीर, उससे भी सूक्ष्म विश्वमय शरीर, और इन सबसे सूक्ष्माति-सूक्ष्म निर्माणमय शरीर होता है। जब उस लोक तक जाकर उसे भी छोड़ दें तो, वहां केवल आत्मा ही होती है, और वह फिर से पूर्णात्मा बन जाती है।

सिर्फ रोज़ सुबह एक घंटा, शाम को एक घंटा ध्यान में बैठ जाने

से ही वह स्थिति चाहे तो नहीं आती। आजकल लोग यह सोचकर ध्यान कर रहे हैं कि उनकी कुछ भौतिक परेशानियाँ हैं, बीमारियाँ हैं, मानसिक समस्याएँ हैं, पारिवारिक झगड़े हैं, बच्चों से, माता-पिता से, पति से, इन झगड़ों के कारण लोग उन्हें ध्यान के माध्यम से दूर करने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें लगता है कि ध्यान इसी उद्देश्य के लिए है।

लेकिन ये सब अल्प हैं। इस ध्यान के माध्यम से वास्तविक क्या है यानी इन विभिन्न प्रकार की मुक्तियों में से किसी एक मुक्ति को पाना चाहिए, उस सत्यलोक को पहुंचना चाहिए, उस पूर्णात्मा बनना चाहिए, यह कार्य प्रत्येक व्यक्ति को करना ही है, इसे हासिल करना ही है। जब आप यह प्रयास करेंगे, तो बाकी सब अपने आप हल हो जाएगा।

आप यह प्रयास करिए। जितना भी अवसर मिले, तो उतना समय लगाकर इस ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करिए। यदि आप ऐसा करते रहेंगे, तो कम-से-कम अगला जन्म में आपके लिए अनुकूल प्राप्त होगा। अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछता है यदि इस जन्म में ये नहीं कर सकते, हासिल नहीं कर सकते, तो क्या करना चाहिए?

बेटा! इस जन्म में यदि तुम प्रयास करते हो, तो अगले जन्म में अमीर के घर में जन्म लोगे, या फिर योगियों के घर में जन्म लेगे और बाद में ज़रूरी साधना पूरी करके मोक्ष को प्राप्त करोगे। इसलिए जो कोई भी दीक्षा के साथ साधना करता है, वह या तो इसी जन्म को अपना अंतिम जन्म बना लेता है, अथवा आने वाला अगला जन्म ही उसका अंतिम जन्म होता है।

‘‘गलती पकड़ना सबसे बड़ी गलती है।’’

पत्री जी ने कहा कि ‘‘गलती पकड़ना ही सबसे बड़ा दोष है।’’ यहाँ देखें तो नीचे एक छोटा-सा वाक्य दिया हुआ है। इसमें अंतहीन अर्थ है। जो इसे समझकर आचरण करता है, वही महान बनेगा। अगर वह नहीं समझेगा और आचरण नहीं करेगा, तो उसे बहुत नुकसान होगा।

इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि किसी की भी आलोचना नहीं करनी चाहिए। आलोचना का मतलब है दूसरों की गलतियाँ बताना। उन्होंने कहा ‘‘नो कमेंट, नो जजमेंट।’’ किसी की भी आलोचना मत करो, और किसी के बारे में किसी फ़ैसले मत लो। अब इस संदेश का उससे थोड़ा निकट संबंध है, इसलिए आइए इसे जानते हैं।

दुनिया में तरह-तरह के लोग होते हैं। हम जो पूर्णात्मा से निकल हुई अंशात्मा रूप में हम सबसे पहले मानव शरीर में प्रवेश करते हैं। इस प्रकार मानव शरीर में प्रवेश करके कुछ लोगों ने 100 जन्म लिए हैं, कुछ ने 200 जन्म लिए हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने 300 जन्म तक लिए हैं। लेकिन उन सभी का स्वभाव एक जैसा नहीं होता।

प्रारंभिक जन्मों में अर्थात पहले जन्मों में मनुष्य तमोगुण-प्रधान होकर आता है। इस प्रकार कुछ जन्म लेने के बाद धीरे-धीरे वह गुण परिवर्तित होता जाता है और मनुष्य रजोगुण-प्रधान बन जाता है। उसके बाद और अधिक परिवर्तन होते हुए, वह सत्वगुण-प्रधान हो जाता है। उसके बाद वह निर्गुणी हो जाता है।

अर्थात मनुष्य अलग-अलग गुणों के साथ देखने में सभी मनुष्यों जैसे ही लगते हैं। सभी के अंग एक जैसे ही होते हैं। लेकिन वे जो काम

करते हैं और विचार सब एक जैसे नहीं होते।

एक सेवा करता है, दूसरा मारता है, एक अच्छा कमाता है, तो कोई जो है वो खो देता है। एक व्यक्ति अपनी पत्नी को प्रेम से देखभाल करता है, जबकि दूसरा अपनी पत्नी को नर्क जैसा जीवन दिखाता है। कुछ लोग जीवों को कष्ट देते हैं, जबकि कुछ वही जीवों से प्रेम करते हैं। एक सेवा करता है, जबकि दूसरा धोखा देकर दूसरों को लूटता है।

इस प्रकार अलग-अलग गुणों वाले मनुष्यों के बाहरी कम-काज भी एक जैसी नहीं होतीं। वे उन्हीं गुणों के अनुसार अलग-अलग होते हैं। एक व्यक्ति के किए गए काम दूसरे से एक जैसे नहीं मिल सकते।

बहुत-सी स्त्रियाँ इस ध्यान मार्ग में आकर मांसाहार छोड़ देती हैं, और प्रतिदिन बैठकर ध्यान करना करते रहते हैं। लेकिन उनके पतियों को यह पसंद नहीं आता, वे उन्हें डाँटते हैं और हतोत्साहित करते रहते हैं। असल में तुम यहाँ किस लिए आई हो ? क्या संन्यासियों में शामिल होने आई हो ? ऐसा कहकर वे तरह-तरह से डाँटते रहते हैं। बेचारे वे दुःखी होते रहते हैं, वे चाहती हैं कि वह भी बदल जाए। लेकिन उनके काम वैसे नहीं है, जैसे उन्होंने किए हैं।

और इसका कारण यही है कि हर व्यक्ति में अपनी अलगङ्क अलग गुण होते हैं। इसीलिए एक व्यक्ति के कार्यों का दूसरे व्यक्ति के कार्यों से कोई संबंध नहीं होता। प्रारम्भिक जन्मों में रहने वाला व्यक्ति तमोगुण का प्रधान होता है। ऐसे व्यक्ति का व्यवहार और उसकी गतिविधियाँ उसी गुण से संबंधित होती हैं। वे उसी गुण के लिए समर्पित होते हैं, उसी गुण का प्रतिरूप होते हैं और उसी गुण की छाया होते हैं। इसी प्रकार जब वह मध्यस्थ जन्मों में आते हैं, तब रजोगुण में रहते हैं। इस प्रकार रजोगुण प्रधान व्यक्ति की गतिविधियाँ अलग तरह की होती हैं।

बहुत-से लोग सोचते हैं कि मेरा पति बदलना चाहिए, मेरी पत्नी बदलना चाहिए, मेरे बच्चे बदलना चाहिए और मुझे उन्हें अपने मार्ग पर लाना चाहिए। लेकिन यदि गुण एक जैसे नहीं हैं, तो यह संभव नहीं है।

यही बात पत्री जी ने कह रहे हैं। सबके काम एक जैसे कैसे हो सकते हैं ? वे कहते हैं। आप जो भी खाना बनाकर खाते हो, तो उसी की गंध तुम्हारे हाथों में आती है। अगर टमाटर की सब्ज़ी बनाकर खाओगे, तो हाथों से टमाटर की ही गंध आएगी। अगर टमाटर की सब्ज़ी बनाकर खाओगे, तो हाथों से करेला की गंध नहीं आएगी। इसी प्रकार मनुष्य के गुणों के अनुसार ही उसके कार्य होते हैं। इसी कारण कहा गया है कि सब लोगों के कार्य एक जैसे होना असंभव है।

इसी प्रकार रजोगुण प्रधान व्यक्ति की गतिविधियाँ और सत्त्वगुण प्रधान व्यक्ति की गतिविधियाँ एक जैसी नहीं हो सकतीं। रजोगुण प्रधान व्यक्ति राजनीति में रहता है। यदि व्यक्ति सत्त्वगुण प्रधान हो, तो वह उत्तम संगीत सुनता है, भजन करता है, नहीं तो वह अच्छे खेल खेलता है। उसे वही चाहिए।

इसी प्रकार, सत्त्वगुण-प्रधान व्यक्ति की गतिविधियाँ और निर्गुणी व्यक्ति की गतिविधियाँ एक जैसी नहीं होतीं। निर्गुण-प्रधान व्यक्ति हमेशा ध्यान करता रहता है। वह ध्यान के बारे में बात करता रहता है। यदि आपका व्यवहार ऐसा हो, तो समझना चाहिए कि आप सत्त्वगुण से निर्गुण की ओर आ रहे हैं।

इसीलिए मैं कहता करता हूँ कि आप सभी 350 जन्मों को पार चुके हैं और आखिर आखिर जन्मों में आ चुके हैं। इसलिए मनुष्य की बाहरी गतिविधियाँ, उसके क्षेत्र और उसके कुरुक्षेत्र, उसके आंतरिक गुणों के अधीन होते हैं। वे असहाय हैं, उनकी आलोचना की जाए, दोष लगाए

जाएँ, तो भी वे कुछ कर नहीं सकते। वे उन गुणों के बंधन में हैं। इसलिए उनके बाहरी कार्य भी बिल्कुल ढले हुए साँचे की तरह वैसे ही रहती हैं। इसलिए आपकी गतिविधियाँ आपके स्वधर्म की साँची परछाईं हैं।

इसलिए ऐसा होना असाध्य, असंभव है कि गुण एक प्रकार के हों और कर्म किसी और प्रकार के। इसके अलावा यह गुण इतनी जल्दी बदलता नहीं है। यह धीरे-धीरे परिवर्तित होता रहता है। अर्थात इसके लिए कई जन्म लगते हैं। लेकिन यदि गुण बदलनी चाहिए यानी सभी जन्म लाने के बजाय ३४श्वास पर ध्यान' की साधना करें तो इसी जन्म में बदल जाएंगे।

इसलिए किसी की कर्मों को भी दोष नहीं करनी चाहिए, वे उसी तरह व्यवहार करते हैं। क्योंकि ? जैसे चलना सीख रहा बच्चा जैसा चलता है, वैसे ही प्रारंभ जन्मों में होने वाला आत्मा भी उसी प्रकार व्यवहार करती रहती है। उसने तो अभी कुछ ही जन्म लिए हैं, फिर वह तुम्हारी सोच के अनुसार कैसे व्यवहार करेगा।

इसलिए पाँच जन्मों में जो-जो स्वभाव होते हैं, वही होते हैं। 50 जन्मों में जो-जो गुण होते हैं, वही होते हैं। इसी तरह जिसने 300 जन्म लिए हैं, उसे जो भी काम करने होते हैं, वही करता है। अर्थात वह प्रकृति में विद्यमान गुणों के अनुसार ही व्यवहार करता रहता है। इसलिए गलती कहाँ है ?कोई गलती नहीं है। इसलिए ''गलती पकड़ना ही सबसे बड़ी गलती है''।

इसलिए हर मनुष्य कुछ जन्मों में तमोगुणी के अनुसार व्यवहार करता है। और कुछ जन्मों में वह रजोगुणी होता है ! और कुछ जन्मों में वह सत्त्वगुणी होता है, और आखिर में कोई भी मनुष्य निर्गुण हो ही जाता है। इसलिए किसी को भी गलती देने की आवश्यकता नहीं है यह बात पत्री

जी ने बहुत बढ़िया कहा है।

पत्री जी ने और यह भी कहा कि क्राइस्ट ने 'जज मत करो' कहा है। जब एक व्यभिचारिणी को पत्थर मारने वाले थे, तब उन्होंने क्या कहा ? तुम में से जो कोई भी गलती न करने वाला हो, वही पत्थर मारे। तब सभी ने पत्थर नीचे गिरा दिए।

इसलिए जिस लेवल पर वे गलतियाँ भी करता है और सही काम भी करता है। इसलिए हम किसी में गलती पकड़ने को अधिकारी नहीं हैं, इसलिए हमें किसी की भी आलोचना नहीं करनी चाहिए। आलोचना करना एक बड़ी भूल है, जो लोग तुमसे उच्च गुण-स्थिति में होते हैं, उनके कर्म तुम्हें गलत ही दिखाई देते हैं। इसी प्रकार जो लोग तुमसे निम्न गुण स्थिति में होते हैं, उनके कर्म भी तुम्हें गलत ही दिखाई देते हैं। इसलिए किसी के भी आचरण की निंदा नहीं करनी चाहिए।

अगर तुम कहते हो कि "वह गलत कर रहा है, तो उससे भी बड़ी गलती तुम कर रहे हो" यह सृष्टि का नियम है। यदि तुम सृष्टि के नियमों के विरुद्ध वह कार्य करते हो, तो तुम उससे भी बड़ा पाप बन जाता है। अगर तुम कहते हो कि वह पाप कर रहा है यानी तो उससे भी बड़ा पाप तुम स्वयं कर रहे हो। हमारे सोसायटी में कुछ लोग हैं, जो फेसबुक, व्हाट्सऐप पर लगातार वीडियो डालते रहते हैं और आलोचना करते रहते हैं। लोग पत्री जी के बताए अनुसार नहीं चल रहे हैं कहकर आलोचना करते हैं। अब पत्री जी ने ३५नो कमेंट, नो जजमेंट' नहीं बताया था क्या ? फिर क्या वह गलत नहीं कर रहा ? वह और बड़ी गलती कर रहा है।

इसलिए यह बात जानना चाहिए कि इन आलोचना करने वालों और दूसरों में गलती पकड़ने वालों वे खुद हारेंगे।

चंद्रवंशवाले - सूर्यवंशवाले

ज्ञान दो प्रकार का होता है।

1) परोक्ष ज्ञान 2) अपरोक्ष ज्ञान

यहाँ परोक्ष ज्ञान का अर्थ है जो ज्ञान दूसरों से प्राप्त होता है। दूसरों के बताए गए अनुभवों के माध्यम से जो ज्ञान तुम्हें प्राप्त होता है। दूसरों के ज्ञान-प्रकाश के माध्यम से जो ज्ञान तुम्हें प्राप्त होता है, वही परोक्ष ज्ञान है।

अपरोक्ष ज्ञान का अर्थ है जो ज्ञान स्वयं के अनुभवों के माध्यम से प्राप्त होता है। यह ज्ञान स्व-प्रकाश के माध्यम से प्राप्त होता है। स्व-प्रकाश और स्वानुभव से ज्ञान कैसे प्राप्त होता है ? अर्थात

जब आप विशेष ध्यान-साधना करते हैं, तो भीमावरम् की कक्षाओं में नियमित रूप से भाग लेते हैं, और वहाँ होने वाले घंटों-घंटों के ध्यान में विचार-रहित स्थिति में रहते हैं, तब धीरे-धीरे आपके अपने शरीर में स्थित आत्मा से अनंत ज्ञान प्रवाहित होने लगता है।

तब दूसरों की कही हुई बातों को बताने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं रहती। वहाँ तुम बस एक बात को लेते हैं वहाँ से तुम्हें भीतर से प्राप्त होता रहता है। वही जो आप कहते रहते हैं, यही अपरोक्ष ज्ञान है। इस प्रकार जो ज्ञान तुम्हें भीतर से प्राप्त हो रहा है, उसे यदि तुम सिखा करते रहते हैं, तो आप वह अपरोक्ष ज्ञान सिखा रहे माने जाएंगे। जब तुम अपनी आत्मा से प्राप्त हो रहे ज्ञान को सिखा सकते हो, तब तुम उसे बहुत स्पष्ट और बिना किसी कंफ्यूजन के दूसरों को बहुत अच्छे से बता पाएंगे।

यदि तुम्हें अपरोक्ष ज्ञान नहीं मिलती है, तो आप दूसरों की बातें बताते रहते हैं। यदि आप खुद ही यह कहना चाहते हैं अपरोक्ष ज्ञान नहीं मिलती है, तो तुम कुछ-न-कुछ यूँ ही कह देते हो।

यदि तुम दो पॉइंट लेकर भी दो घंटे तक पूर्ण स्पष्टता के साथ समझा सकते हो, तुम्हें अपरोक्ष ज्ञान मिल रही है तो और तब तुम बहुत महान बोधक बन जाते हैं। कह देना ही महत्वपूर्ण नहीं है, रटकर कही गई बात और स्वयं

के मधुर अनुभव से कही गई बात में बहुत अंतर होता है। स्व–प्रकाश से प्राप्त होने वाले ज्ञान को, अर्थात आत्म–प्रकाश से प्राप्त ज्ञान को ही अपरोक्ष ज्ञान कहते हैं।

आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ना चाहने वाला कोई भी व्यक्ति शुरू में परोक्ष ज्ञान पर ही निर्भर करता है, यह स्वाभाविक है। लेकिन उनकी तीव्र ध्यान–साधना के वजह से, दृढ़ निष्ठा से और निरंतर प्रयास के कारण वे अपरोक्ष ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

यह कैसे प्राप्त होता है ? जो लोग ३७श्वास पर ध्यान' का अभ्यास गहराई से करते हैं, उनमें मन का महत्व धीरे–धीरे कम होने लगता है, और जितना मन का महत्व घटता है, उतना ही शरीर में आत्मा का महत्व बढ़ता जाता है। जब यह अवस्था बढ़ती जाती है, तब आत्मा से अपरोक्ष ज्ञान प्राप्त होने लगता है। यहाँ इन दोनों के लिए पत्री जी ने उदाहरण दिए हैं।

क्योंकि ? चंद्रमा स्वयंप्रकाशमान नहीं है। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा का प्रकाश बहुत तेज़ और भव्य होता है। उस दिन आधी रात को बाहर आकर देखें, तो सब कुछ स्पष्ट दिखाई देता है। क्यों दिखाई देता है ? वह चंद्रमा का प्रकाश है। लेकिन वह जितना भी चमक रहा है, अर्थात वह उसका अपना प्रकाश नहीं है, सूर्य के प्रकाश के कारण ही उसमें इतनी चमक है।

तो क्या वह पूर्णिमा का प्रकाश स्थायी होता है ? यानी नहीं होता। वह प्रकाश धीरे–धीरे घटता है, अमावस्या आती है और वहाँ पूर्ण अंधकार छा जाता है। यदि वास्तव में चंद्रमा के पास स्वयं का प्रकाश होता, तो वह सूर्य की तरह सदैव प्रकाशित रहता।

इसके अलावा वह कुछ दिनों प्रकाश में और कुछ दिनों बिना प्रकाश के अंधकार में नहीं रहता। अर्थात चंद्रमा केवल कभी–कभी ही प्रकाशित होता है। चंद्रमा में पूर्णिमा और चंद्रकलाएँ होती हैं।

यहाँ चंद्रप्रकाश पर जीवन जीने वाले व्यक्ति का जीवन एक समय अच्छा होता है, तो दूसरे समय अच्छा नहीं होता। इन्हीं लोगों को पत्री जी ने ३७चंद्रवंशी' कहा है। ये वे लोग हैं जिन्होंने अभी तक अपने जीवन में ध्यान–अभ्यास की शुरुआत नहीं की है। हम कह सकते हैं कि उन्होंने अभी तक

शुरुआत ही नहीं की है।

ये लोग पुस्तकें अच्छी तरह पढ़ते हैं, और शाम के समय तीनङ्कचार लोग बैठकर आपस में चर्चा भी करते हैं। वे कहते हैं कि हमने सज्जनों की संगति कर ली है। ये लोग स्त्रस्त्रश्वास पर ध्यानस्त्रस्त्र की साधना नहीं करते। उन पुस्तकों के माध्यम से जानकर वे ऐसा समझते हैं कि हमने बहुत कुछ जान लिया है, हमारे पास बहुत ज्ञान है। ऐसे लोगों को पत्री जी न चंद्रवंशवाले कह सकते हैं ऐसा उन्होंने कहा है।

लेकिन जो लोग स्वाध्याय और सज्जन-संगति के साथ-साथ अपने आत्म-ध्यान अभ्यास के प्रति अत्यधिक समर्पित रहते हैं, वे स्वयं प्रकाशमान बन जाते हैं। ऐसे लोगों को सूर्यवंशी कहते हैं।

अब जो लोग वर्षों से भीमवरम की कक्षाओं में आ रहे हैं और मॉर्निंग ज़ूम में भी नियमित रूप से भाग ले रहे हैं, उन सभी को हम सूर्यवंशी कह सकते हैं। क्योंकि ये लोग धीरे-धीरे अपरोक्ष ज्ञान को हासिल करते जाते हैं।

केवल यूँ ही पुस्तकें पढ़कर और चार लोगों के साथ बैठकर उन्हीं पुस्तकों में पढ़ी हुई बातों पर चर्चा करते हैं तो वे चंद्रवंशी हैं। उनसे यदि किसी क्लास अलग से समझाने को कहा जाए, तो वे कुछ भी कह नहीं पाते और जो बताते भी हैं उसमें आधी बातें गलती होती हैं। वे सोचते हैं कि किसी बड़ी बात के लिए कह रहे हैं, लेकिन जो कुछ उन्होंने जाना है उससे आगे अपना स्वयं का ज्ञान बताने की कोशिश करें, तो उसका कोई उपयोग नहीं होता।

सब लोग यह सोचते हैं कि हम इतना ध्यान कर रहे हैं, तो हमें क्या लाभ मिला ? लेकिन असली बात यह है कि क्या हम उन महान व्यक्तियों की तरह एक पत्री जी की तरह, बुद्ध की तरह, रमण महर्षि की तरह, या विवेकानंद की तरह बोध करा पा रहे हैं ! आपको यह देखना चाहिए।

पत्री जी के विषय में मैं सचमुच आश्चर्यचकित हो गया। वे किसी एक पॉइंट को लेते हैं और उसी पर एक घंटे तक भी क्लास पढ़ाएंगे।मैं यही सोचता रहता था वह ऐसा कैसे समझा रहे हैं ?वे कहते थे कि यदि हमेशा

वही–वही बातें दोहराई जाएँ, तो लोगों को बोर हो जाती है इसलिए क्लास शुरू करने से पहले वे कहते थे चाहे जितने लोग आएँ, कुछ लोगों को बुलाकर उनसे बात करवाओ।अगर वे लोग बात करते समय कुछ खास बातें कहते रहें तो उन बातों में से कुछ अच्छे और सामने वालों को आकर्षित करने वाले पॉइंट्स को लेकर, वे उन्हीं पर एक घंटे तक बिना रुके धाराप्रवाह समझाते रहते थे।

उससे पहले वे यह नहीं सोचते थे कि उसी टॉपिक पर बोलना है। इस बातचीत के दौरान वे किसी एक पॉइंट को पकड़ लेते थे। तब मुझे समझ में आया कि जब आपको समझ नहीं आ रहा है कि क्या बोलना है, और यदि आप सूर्यवंशी हों, तो वहाँ कुछ लोगों से बातचीत करवाकर, उसी में से किसी एक पॉइंट को पकड़कर यदि आप कहते हैं, तो आप स्वयं प्रकाशमान होते हैं, अर्थात सूर्यवंशवाले ही होते हैं।

उन्होंने और क्या कहा कि जो लोग सही सिद्धांत को जानते हैं वे चंद्रवंशी होते हैं। अर्थात वे महान लोगों की कही गई बातों को पुस्तकों के माध्यम से पढ़कर अच्छी तरह जान लेते है। जब उनकी बुद्धि अच्छी तरह बढ़ेगी तो, तब वे उसे समझ लेते हैं और दूसरों को भी अच्छी तरह समझा पाते हैं। लेकिन जो लोग ये दोनों करते हुए, उसके साथ–साथ सही तरीके से ध्यान–अभ्यास को गम्भीरता से करते हैं, वे अवश्य ही सूर्यवंशी जैसे प्रकाशमान हो जाते हैं ऐसा उन्होंने कहा।

पत्री जी ने और क्या कहा कि प्रभु यीशु का यह संदेश यहाँ स्मरणीय है "यदि राई के दाने जितना भी विश्वास हो, तो पहाड़ों को भी हिलाया जा सकता है।"

यदि वैसा ही राई के दाने जितना विश्वास थोड़ा–सा विश्वास हमारे भीतर, अपने प्रति और हमारे द्वारा किए जा रहे 'श्वास पर ध्यान' के अभ्यास के प्रति हो, तो हम निश्चय ही अनेक आध्यात्मिक पर्वतों को पार कर सकते हैं, स्वयं प्रकाशमान बन सकते हैं और ऐसे लोग ही गुरु के तौर पर चमकेंगे।

इसीलिए आप देखिए, हमारे पास बहुत–से लोग आ रहे हैं। उनमें

से बहुत–से लोग क्लासेस भी बताया रहे हैं। कुछ लोग दो साल, तीन साल तक भी रहते हैं। लेकिन वे वैसे ही रहते हैं। उनमें विश्वास नहीं होता, वे मेरी वजह से कहाँ होगा? वे सोचते हैं। जब कुछ लोग अच्छी तरह समझाकर कहते हैं, तो इनके मन में यह भाव आता है कि शायद उनके भीतर कोई पूर्वजन्म का संस्कार होगा, इसलिए वे ऐसा कह पा रहे हैं।

अर्थात उन्हें विश्वास नहीं होता है कि मैं यह कह सकता हूँ। इसी कारण वे कितने ही वर्षों तक ऐसे ही सुनते रहते हैं, लेकिन उनमें कोई परिवर्तन नहीं आता, न ही कोई विकास होता है। वे कहते हैं कि जो कुछ भी वे कहना चाहते हैं, वह उन्होंने दूसरों से लिया है, पुस्तकों में पड़ी है, या वीडियो में सुना हुआ ही होता है। इस प्रकार वे सभी जिन्होंने दूसरों से ज्ञान पाया है शिष्य की जैसे बने रह जाते हैं।

इसलिए मनुष्य भी गुरु के रूप में, स्वयं–प्रकाशक के रूप में परिपूर्ण बनें यही पी. एस. एस. एम. का मुख्य सिद्धांत, अर्थात लक्ष्य है।

इसलिए जो लोग केवल स्वाध्याय, सिर्फ अच्छे सज्जन–संगती करते हैं, वे परोक्ष ज्ञान ही प्राप्त करते हैं। लेकिन जो लोग इन दोनों के साथ–साथ निरंतर और एकाग्र ध्यान–साधना करके अपरोक्ष ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे स्वयं–प्रकाशक के रूप में भी बढ़ते हैं, और परिपूर्ण बन जाते हैं।

आखिर में पत्री जी ने जो कहा कि प्रारंभ में सभी लोग स्वाध्याय और सज्जन–संगति को विशेष रूप से करते हुए, चंद्रवंशवाले होने पर भी यदि अकुंठित दीक्षा के साथ ध्यान–साधना करें, तो वे क्रमशः सूर्यवंशवाले जैसे बन जाएंगे।

अंत में पत्री जी ने चंद्रवंशी होने वालों को अपनी बधाई दीं। सूर्यवंशी होने वालों को पत्री जी ने शत–कोटि सूर्य–नमस्कार कहे। इसलिए हर कोई सूर्यवंशी रूप में विराजमान हो। इस मार्ग पर आने वाले लोग यही जाननी चाहिए।

मनुष्य के तीन प्रकार के जीवन होते हैं। ये तीनों ही मनुष्य के ज्ञान की परिधि को सूचित करने वाले हैं। अब इन तीन प्रकार के जीवन जीने वाले लोगों के बारे में बात करते हैं। असल ये तीन प्रकार क्या हैं ?

1) रात का जीवन, 2) संध्या जीवन, 3) दिन का जीवन

रात का जीवन अर्थात पूरी तरह अज्ञान में भरा हुआ जीवन। इसी कारण अज्ञान की तुलना अंधकार से की जाती है। जैसे अंधकार में जो है वह दिखाई नहीं देतीं, वैसे ही अज्ञान में रहने वालों को जो है, वह दिखाई नहीं देता अर्थात उन्हें पता नहीं।

संध्या जीवन में ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान पर रुचि है। लेकिन उस ज्ञान के बारे में कही गई बातें पूरी तरह समझ में न आने के कारण, या भय की वजह से, आचरण नहीं हो पाता। सब कुछ जानते हैं, लेकिन व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आता। इसलिए जानने के बाद भी यदि आचरण न हो तो और परिवर्तन न आए, तो वह संध्या जीवन में ही बना रहता है।

दिन का जीवन अर्थात यह पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करने वालों का जीवन है। गहन ध्यान-साधना करने से उनका ज्ञान बहुत बढ़ जाता है और अग्नि की तरह प्रज्वलित हो उठता है। ऐसी ज्ञानाग्नि में वे अपने कर्मों को भी भस्म कर लेते हैं और मुक्ति को मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं।

– तटवर्ती वीर राघवराव

Rs.50/-

Scan these QR codes using Google Lens to download the books of Mr. Tatavarthy Veera Raghava Rao & Mrs.Rajalakshmi from the website.

Telugu Books	English Books	Hindi Books	Kannada Books	Tamil Books